रीतिकाल की परिस्थितियां

साहित्य समाज का प्रतिबिंब है, इसलिए साहित्य पर उस समय की राजनीति, समाज, संस्कृति, धर्म इत्यादि का व्यापक प्रभाव पड़ता है। आचार्य रामचंद्र शु€ल के अनुसार–

“प्रत्येक देश का साहित्य वहां की जनता की चिŽावृŽि का संचित प्रतिबि▯ होता है। तब यह निश्चित है कि जनता की चिŽावृति के परिवर्तन के साथ–साथ साहित्य के स्वरूप में परिवर्तन होता चला जाता है।”

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का कथन है–

जब कोई साहित्य नवीन जातियों के स□र्क में आता है, तब उस में नई प्रवृZियाँ आती हैं और नई आचार पर□रा का पालन होता है।

इन दोनों कथनों से स्पष्ट है कि किसी भी समय के साहित्य को तत्कालीन परिस्थितियाँ प्रभावित करती है।

रीतिकाल के साहित्य को प्रभावित करने वाली परिस्थितियाँ निम्नलिखित हैं:-

(क) राजनीतिक परिस्थितियाँ–रीतिकाल का समय संवत् क्स्त्र वि॰ से क–` तक है। यह समय राजनीतिक उथल–पुथल का समय था। इस युग को मुगलों के शासन के वैभव के चरम उत्कर्ष से धीरे–धीरे पतन व विनाश का युग कहा जा सकता है। शाहजहां के बाद स्थिति में परिवर्तन आया। औरंगजेब की कट्टरता ने कलाकारों के लिए समस्या खड़ी कर दी। औरंगजेब को साहित्य, संगीत, कला, सौन्दर्य के प्रति घोर चिढ़ थी। औरंगजेब के पश्चात् विशाल मुगल साम्राज्य का पतन हो गया तथा चारों ओर युद्ध तथा विरोध का वातावरण था। परिणामस्वरूप पुनः छोटी–छोटी रियासतें एवं छोटे–छोटे रजवाड़े पनपने लगे और उनके आश्रय में राजकवि पलने लगे।

शासकों को आत्मप्रशंसा का मोह एवं शृंगारिक मनोरंजन की चाह थी और कवियों को दान एवं मान की। दोनों के निकट आने से इन उद्देश्यों की पूर्ति में देर न लगी।

केशव, चिन्तामणि, देव, भिखारीदास, मतिराम, पद्माकर, भूषण जैसे आचार्यों ने अपने आश्रयदाताओं की प्रशस्तियाँ लिखीं। डॉ. हरिश्चंद्र वर्मा के अनुसार–

"सब लक्ष्मी की ही महिमा है। इसीलिए रीतिकाल के कवियों का आकर्षण नगरीय जीवन ही रहा। उनके काव्यों के पात्र रत्नजड़ित महलों में रहते हैं और उनकी नायिकाओं की कमर लचकती चलती है।"

मोह□द शाह रंगीला के दरबारी सदा नाच–गान, रास–रंग एवं भोग–विलास में डूबे रहते थे और नैतिकता का कहीं भी स्थान नहीं था। इसी तरह सम्राट जहांदाराशाह का भी हाल था। उसके स□बन्धमें एक कवि ने लिखा है– वह दर्पण और कंघा हाथ में लिए एक सुन्दर स्त्री के समान अपने केशों का पुजारी था। इनकी शृंगार भावना भी निम्न कोटि की थी। डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी के शŽदों में–

इस काल की शृंगार भावना में एक प्रकार के विलासी मनोभावों की प्रवृिZा दिखाई देती है।

स्पष्ट है कि इस प्रकार की राजनीतिक परिस्थितियों ने विलासी राजाओं के आश्रय में पलने वाले कवियों को अत्यधिक प्रभावित किया। जिस के फलस्वरूप रीतिकाल में शृंगाररस–मग्र साहित्य की प्रवृिZा दृष्टिगोचर होती है।

(ख) सामाजिक परिस्थितियां:- 'यथा राज तथा प्रजा' वाली उक्ति इस काल पर भी पूरी तरह से लागू होती है। राजा और प्रजा दोनों सुरा और सुंदरी के प्रेमी हो गये थे। महलों का अंग बन चुके रूप-बाजारों का प्रभाव जनता पर भी पड़ा जिसके फलस्वरूप बौद्धिक स्तर गिरा। पौरुष का पतन हुआ।

बहु पत्नी एवं बहु विवाह का प्रचार हुआ तथा नारी विलास की वस्तु बन कर रह गई। दूसरे, अन्धविश्वास, टोने-टोटके, जादू और रूढ़ियों पनपने लगीं। तीसरे, शराब एवं जुए का प्रसार हुआ जिससे इस युग को आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। चौथे, निम्न वर्गों को ये मात्र सृष्टि मानते थे जिनका अस्तित्व केवल उन के लिए ही था।

पांचवें, नैतिक मूल्यों का पूर्णतया अभाव हो गया था। छठे, चिकित्सा, शिक्षा एवं सुरक्षा- सुरक्षा का कोई प्रबन्ध न था। सातवें, आर्थिक दृष्टि से तत्कालीन समाज को दो वर्गों में बांटा जा सकता है- एक, उत्पादक वर्ग और दूसरा, उपभोक्ता वर्ग। उत्पादक वर्ग में श्रमिक और कृषक रखे जा सकते हैं और उपभोक्ता वर्ग से मुगल बादशाह तथा उनसे संबंधित लोग कहे जा सकते हैं। उनमें शोषित और शोषक का संबंध था। आठवें, धर्मस्थल भ्रष्टाचार तथा पापाचार के केन्द्र बन गए थे। नवें, हिन्दू अपने आराध्य राम व कृष्ण की लीलाओं में विलासी जीवन की संगति ढूँढने लगे। कुल मिलाकर इस युग को घोर विलासिता का युग कहा जा सकता है।

(फ) धार्मिक परिस्थितियाँ:- यह काल धार्मिक दृष्टि से पतन का युग था। रीतिकाल में धर्म-भावना रूढ़िवाद और मायाजाल में फंस कर रह गई थी। इस युग में अंध विश्वासों, रूढ़ियों और आडम्बरों ने धर्म का स्थान ग्रहण कर लिया था। भक्ति काल में वल्लभाचार्य ने कृष्ण-भक्ति में माधुर्य भावना को स्थान दिया था। रीतिकाल पर इसका प्रभाव पड़ा तथा, अतः रीतिकाल में कृष्ण की प्रणय-गाथाओं की ही भरमार है। बाद में कृष्ण भक्ति के प्रभाव से राम भक्ति में भी रसिकता का समावेश हो गया।

(ब) सांस्कृतिक एवं कलात्मक परिस्थितियां– सामाजिक अवस्था के समान इस युग की सांस्कृतिक अवस्था भी अत्यंत शोचनीय थी। औरंगजेब भी कट्टरता की नीति से अकबर आदि की उदारवादी नीति पर गहरी ठेस लगी। मन्दिरों और मठों में अव ऐश्वर्य और विलास का खुला प्रदर्शन होने लगा।

(भ) साहित्यिक परिस्थितियां– रीतिकाल का युग प्रदर्शन–प्रधान युग था। रंगीन मिजाजी, प्रतियोगिता की भावना, चमत्कार और चमत्कार करने का उद्देश्य इस साहित्य में विद्यमान था। संस्कृत के शास्त्रीय ग्रन्थों का अनुवाद करके काव्य की विविध पर□राओं से अपने आश्रयदाताओं एवं जनसाधारण को परिचित करवाने के लिए इन कवियों ने लक्षण ग्रंथ लिखे।

इस समय दरबारी भाषा फारसी थी और उस में लैला मजनूँ, शीरीं-फरहाद के किस्से दरबारी वातावरण में मशहूर थे। उनसे होड़ लेने के लिए हिन्दी में राधा-कृष्ण के नाम पर निम्न स्तर के किस्से, कहानियाँ आरम्भ हो गई।

निष्कर्षः- रीतिकाल में राजतंत्र और सामंतवाद की प्रधानता ने साहित्य व कला को अपने रंग में रंग दिया। कलाकार की आत्मा पर यही बाहरी परिस्थितियां हावी रहीं, इसीलिए इस समय का साहित्य शाश्वत सत्यों की बात न कहकर वासनात्मक रंग में अधिक रंगा हुआ है।

Submitted By:-
डा.ज्योति गोगिया
हिन्दी विभाग